Dhanauri International Journal of Multidisciplinary Research (DIJMR)
Volume 2 Issue 1, July (2026)
ISSN: 3107-9563 (online)
doi.org/10.5281/zenodo.21407360

ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूहों की प्रभावशीलताः लक्सर ब्लॉक (हरिद्वार) का समाजशास्त्रीय अध्ययन

(Effectiveness of Self Help Groups in Economic and Social Empowerment of Rural Women: A Sociological Study of Laksar (Haridwar) Block)

1. डॉ0 (प्रो0) श्रीपाल चौहान, शोध निर्देशक एवं डीन, समाजषास्त्र विभाग, फैकल्टी ऑफ आर्ट्स, ह्यूमनिटीज एंड सोशल सांइसेज मदरहुड यूनिवर्सिटी, रूड़की (उत्तराखण्ड) भारत।
2. कु0 सोनो कुमारी, शोध छात्रा, समाजषास्त्र विभाग, फैकल्टी ऑफ आर्ट्स, ह्यूमनिटीज एंड सोशल सांइसेज मदरहुड यूनिवर्सिटी, रूड़की (उत्तराखण्ड) भारत।
3. डॉ0 नेपाल सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जोशीमठ (चमोली) उत्तराखण्ड

प्रस्तावना (Introduction)- आर्थिक सशक्तिकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्तियों और समुदायों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए काम किया जाता है। इसका उद्देश्य लोगों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना और उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार करना है। इसमें कोई शक नहीं कि महिलाए सशक्त होंगी तो समाज मजबूत होगा। जिस समाज में महिलाए पढ़ी–लिखी, जागरुक और सशक्त होती हैं वहां उन्नति और खुशहाली अलग ही दिखती है। उत्तराखण्ड की गंगा नदी के अवसाद के निक्षेपण से निर्मित मैदानी क्षेत्र (हरिद्वार के लक्सर ब्लॉक) में निवास करने वाली महिलाओं को यदि प्रोत्साहित किया जाए तो वे आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त और आत्मनिर्भर हो सकती हैं। सरकार द्वारा महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण हेतु महिला उद्यमिता पार्क स्थापित किये जा रहे हैं। सरकार द्वारा कई स्थानों पर महिला स्वयं सहायता समूह बाजार स्थापित किये जा रहे हैं, इन समूह को कुल अर्जित लाभ पर 90 प्रतिशत प्रोत्साहन बोनस दिया जा रहा है। लक्सर ब्लॉक में महिलाओं की आर्थिक सशक्तिकरण के लिए सरकार ने कई योजनायें चलायी है जो इस प्रकार है–प्रधानमंत्री महिला सशक्तिकरण केंद्र स्कीम (PMMSK),महासमृद्वि महिला सशक्तिकरण स्कीम, बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं योजना, सुकन्या समृद्वि योजना, राष्ट्रीय महिला कोष, महिला सम्मान प्राकल्प तथा नारी शक्ति पुरुस्कार आदि योजनाओं द्वारा क्षेत्र की महिलाओं के आर्थिक एवं सामाजिक विकास के लिए एक नई दिशा होगी। महिला स्वयं सहायता समूहों के अन्तर्गत इंदिरा अम्मा कैंटीन की शानदार शुरूआत पूर्ववर्ती सरकार द्वारा की गई है जो कि सभी जिला मुख्यालयों पर आरंभ की गयी है। इस योजना के विस्तार से जहां साधनहीनों को कम कीमत में भरपेट पौष्टिक भोजन मिलता है वहीं हमारे उत्तराखण्ड के व्यंजन भी लोकप्रिय हो रहे हैं। इंदिरा अम्मा कैंटीन सभी जिलों में सफलतापर्वूक संचालित किये जा रहे हैं। महज रू0 20 से 25 तक की थाली में राजमा, उड़द तथा भट्ट की मिश्रित दाल, चौलाई का साग या आलू गोभी की सब्जी, 4 रोटी, चावल, हरी चटनी और अचार दिया जाता है। इस पहल से स्थानीय और राज्य स्तरीय व्यंजनों को और मांग बढेगी तो निश्चित तौर पर हमारे क्षेत्र के स्थानीय लोग इनकी पैदावार बढाने के लिए प्रोत्साहित होगें।

Corresponding author email: snepal@gmail.com
Published online-17 July 2026

1. ***मुख्य शब्द***–*आर्थिक सशक्तिकरण,महिलास्वयं सहायता समूहों, प्रभावशीलता, आर्थिक एवं सामाजिक विकास।*

शिोध विधि तंत्र (Research Methodolofy)- प्रस्तुत शोध पत्र में आंकडों का संगलन प्राथमिक व द्वितीय स्त्रोतों के माध्यम से किया गया है द्वितीय आंकडों का संकलन शोध पत्र समाचार पत्र–पत्रिकाओं आदि से किया गया है। शोध अध्ययन में प्रश्नावली तथा साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से चयनित निदर्शित क्षेत्र के उत्तरदाताओं से आंकड़ों को अध्ययन कर उनका विश्लेषण किया है।

2. **आंकड़ों का संग्रहण (Collection of Data)**

a. **प्राथमिक आंकड़ें (Primary Data):** प्रस्तावित शोध में प्राथमिक आंकड़ों का संग्रहण हेतु शोधार्थी के द्वारा निर्मित व्यक्तिगत साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है।

b. **द्वितीयक आंकड़ें (Secondary Data):** द्वितीयक आंकड़ों हेतु विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा अन्य शोध संस्थाओं व संगठनों के पुस्तकालयों, संबंधित सरकारी व गैर–सरकारी संस्थाओं के कार्यालय एवं आवश्यकतानुसार इंटरनेट के वैध माध्यमों का प्रयोग किया गया है।

c. **अध्ययन के उद्देश्य (Aims of the Study)**– प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु निम्नलिखित उद्देश्य हैं:–

1. महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका का अध्ययन करना।

2. स्वयं सहायता समूहों से महिलाओं के सामाजिक परिवर्तन का विश्लेषण।

3.लक्सर ब्लॉक में स्वयं सहायता समूहों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।

1.1 उत्तरदाताओं द्वारा स्वयं सहायता समूह के सदस्य बनने से पूर्व एवं पश्चात् प्राप्त ऋण संबंधी विवरण

क्र0 सं0	समूह के सदस्य बनने से पूर्व ऋण प्राप्ति के स्रोत	उत्तरदाता की संख्या	उत्तरदाता की संख्या का प्रतिशत	समूह के सदस्य बनने के पश्चात् ऋण प्राप्ति के स्रोत	उत्तरदाता की संख्या	उत्तरदाता की संख्या का प्रतिशत
1.	साहूकार	110	44.00	साहूकार	15	6.00
2.	मित्र संबंधी	50	20.00	मित्र संबंधी	30	12.00
3.	बैंक	25	10.00	बैंक	82	32.80
4.	समूह से	00	0.00	समूह से	95	38.00
5.	ऋण नहीं लिया	65	26.00	ऋण नहीं लिया	28	11.20
	कुल योग	250	100.00	कुल योग	250	100.00

Source: Primary Data Based

ऊपर दी गई तालिका के आधार पर अध्ययन क्षेत्र में उत्तरदाताओं द्वारा स्वयं सहायता समूह के सदस्य बनने से पूर्व एवं पश्चात् ऋण प्राप्ति के विश्लेषण से ज्ञात होता हैं कि साहूकार से पहले 44. 00 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा ऋण लिया गया था, जो समूह बनने के पश्चात् घट कर 6.00 प्रतिशत हो गया। इसी प्रकार 20.00 प्रतिशत उत्तरदाता समूह के सदस्य बनने के पूर्व मित्र संबंधीयों से ऋण प्राप्त करती थी यह भी समूह के सदस्य बनने के पश्चात् घट कर 12.00 प्रतिशत हो गया यदि बैंक से समूह के सदस्य बनने से पूर्व ऋण प्राप्ति को देखा जाए तो केवल 10.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने ऋण प्राप्त किया जबकि समूह के सदस्य बनने के पश्चात् यह आंकड़ा बढ़ कर 32.80 प्रतिशत हो गया इसी प्रकार ऋण नहीं लेने वाली उत्तरदाताओं की संख्या समूह का सदस्य बनने से पूर्व 26.00 प्रतिशत थी, जबकि समूह का सदस्य बनने के पश्चात् यह संख्या 11.20 प्रतिशत रह गयी, समूह का सदस्य बनने से पूर्व एक भी उत्तरदाता ने स्वयं सहायता समूह से ऋण नहीं लिया जबकि समूह का सदस्य बनने के पश्चात् यह आंकड़ा बढ़कर 38.00 प्रतिशत हो गया जिसमें उत्तरदाताओं ने स्वयं सहायता समूहों से ऋण प्राप्त किया है जैसे कि तालिका संख्या 1.1 में दर्शाया गया है।

1.2 उत्तरदाताओं के द्वारा स्वयं की आय प्रयोग (Use of own Income by Respondents)

तालिका संख्या 1.2

उत्तरदाताओं के द्वारा स्वयं की आय प्रयोग संबंधी विवरण

क0 सं0	आपकी आय के प्रयोग की पहली प्राथमिकता क्या है?	उत्तरदाता की संख्या	उत्तरदाता की संख्या का प्रतिशत
1.	बच्चों की शिक्षा की	90	36.00
2.	परिवार चलाने की	72	28.80
3.	बचत की	46	18.40
4.	पशुधन खरीदने की	28	11.20
5.	अन्य	14	5.60
	योग	250	100.00

Source: Primary Data Based

ऊपर दी गई तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उत्तरदाताओं का अपनी आय का प्रयोग करने में किस मद को प्राथमिकता दी जाती है से संबंधित विश्लेषण के अध्ययन से ज्ञात होता है कि 28.80 प्रतिशत उत्तरदाता अपनी आय का प्रयोग परिवार चलाने के लिए खर्च करती है, 36.00 प्रतिशत उत्तरदाता अपनी आय का प्रयोग बच्चों की शिक्षा पर खर्च करने को प्राथमिकता देती है, 18.40 प्रतिशत उत्तरदाता बचत करने, 11.20 प्रतिशत उत्तरदाता पशुधन खरीदने तथा 5.60 प्रतिशत ऐसी भी उत्तरदाता है जो इसके अतिरिक्त अन्य मदों पर खर्च करने पर प्राथमिकता देती है, जैसे कि तालिका संख्या 1.2 में दर्शाया गया है।

1.3 उत्तरदाताओं द्वारा पिछले पांच वर्षों में प्राप्त की गई आय (Income Received by Respondents in the last five year)

तालिका संख्या 1.3

उत्तरदाता द्वारा पिछले पांच वर्षो में प्राप्त की गई आय संबंधी विवरण

क0 सं0	आपने पिछले पांच वर्षों में कितनी आय प्राप्त की? (रूपये में)	उत्तरदाता की संख्या	उत्तरदाता की संख्या का प्रतिशत
1.	50001 से अधिक	22	8.80
2.	30001–50000	40	16.00
3.	20001–30000	82	32.80
4.	20000 तक	106	42.40
	योग	250	100.00

Source: Primary Data Based

उपरोक्त तालिका के आधार पर अध्ययन क्षेत्र में उत्तरदाताओं के पिछले पांच वर्षों में आय प्राप्त करने संबंधी विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि 42.40 प्रतिशत उत्तरदाता ने रू0 20000 तक, 32.80 प्रतिशत उत्तरदाता ने रू0 20001–30000 के बीच, 16.00 प्रतिशत उत्तरदाता ने 30001–50000 तक आय प्राप्त की है, जबकि सिर्फ 8.80 प्रतिशत ऐसी उत्तरदाता है जिन्होने 50001 से अधिक आय पिछले पांच वर्षों में प्राप्त की है, जैसे कि तालिका संख्या 1.3 में दर्शाया गया है।

1.4 उत्तरदाताओं के द्वारा विभिन्न योजनाओं से प्राप्त लाभ (Benefits from various Scheme by Respondents)

तालिका संख्या 1.4

उत्तरदाता के विभिन्न योजनाओं से लाभान्वित होने संबंधी विवरण

क0 सं0	आप किस योजना से लाभान्वित हुए हैं?	उत्तरदाता की संख्या	उत्तरदाता की संख्या का प्रतिशत
1.	डेरी व्यवसाय	35	14.00
2.	सब्जी उत्पादन	46	18.40
3.	परचून व्यवसाय	28	11.20
4.	खाद्य प्रसंस्करण (अनाज,दाल एवं गुड आदि)	50	20.00
5.	हस्त कलां (कताई,बुनाई,सिलाई एवं पेंटिग आदि)	32	12.80
6.	पशुपालन	42	16.80
7.	अन्य	17	6.80
	योग	250	

Source: Primary Data Based

ऊपर दी गई तालिका के आधार पर अध्ययन क्षेत्र में सर्वेक्षण करते समय स्वयं सहायता समूह की उत्तरदाता समूह के सदस्य बनने से किन–किन योजनाओं से लाभान्वित हुये से संबंधित विश्लेषण करने से यह ज्ञात हुआ कि 18.40 प्रतिशत उत्तरदाता सब्जी उत्पादन से लाभान्वित हुयी, 14.00 उत्तरदाता डेरी व्यवसाय, 20.00 प्रतिशत उत्तरदाता खाद्य प्रसंस्करण जिसमें अनाज, दाल एवं गुड आदि उत्पाद शामिल है जिससे वे लाभान्वित हुयी हैं,

जबकि 12.80 प्रतिशत उत्तरदाता हस्त कला जैसे कताई, बुनाई, सिलाई एवं पेंटिग आदि शामिल है, 11.20 प्रतिशत उत्तरदाता परचून से, 16.80 प्रतिशत उत्तरदाता पशुपालन व्यवसाय से तथा 6.80 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसी है जिनका कहना है कि वे इन योजनाओं के अतिरिक्त कई और अन्य योजनाओं से लाभान्वित हुयी हैं जिसे तालिका संख्या 1.4 में दर्शाया गया है।

1.5 उत्तरदाताओं के द्वारा स्वयं सहायता समूह में रहकर किये गये व्यय एवं बचत (Expenditure and Savings made by Respondents living in SHGs)

तालिका संख्या 1.5
उत्तरदाता के स्वयं सहायता समूह में रहकर व्यय एवं बचत संबंधी विवरण

क्र0 सं0	व्यय एवं बचत करती है	उत्तरदाता की संख्या	उत्तरदाता की संख्या का प्रतिशत
1.	केवल व्यय	40	16.00
2.	केवल बचत	20	8.00
3.	व्यय एवं बचत दोनों	190	76.00
	योग	250	100.00

Source: Primary Data Based

उपरोक्त तालिका के आधार पर अध्ययन क्षेत्र में उत्तरदाताओं के स्वयं सहायता समूह में रहते हुए व्यय एवं बचत का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि अधिकांश 76.00 प्रतिशत उत्तरदाता बचत एवं व्यय दोनों करते है, 16.00 प्रतिशत उत्तरदाता केवल व्यय, जबकि 8.00 प्रतिशत ऐसी उत्तरदाता है जो केवल बचत करती है, जैसे कि तालिका संख्या 1.5 में दर्शाया गया है।

1.6 उत्तरदाताओं के द्वारा स्वयं सहायता समूह के सदस्य बनने से पूर्व एवं पश्चात् की गयी बचत(Savings made by Respondents before and after becoming members of SHGs)

तालिका संख्या 1.6
समूह के अन्य सदस्यों द्वारा की जाने वाली बचत संबंधी विवरण

समूह के सदस्य बनने से पूर्व एवं पश्चात् बचत करती थी ?						
क्र0 सं0	समूह के सदस्य बनने से पूर्व बचत करती थी ?	उत्तरदाता की संख्या	उत्तरदाता की संख्या का प्रतिशत	समूह के सदस्य बनने के पश्चात् बचत करती हैं ?	उत्तरदाता की संख्या	उत्तरदाता की संख्या का प्रतिशत
1.	हाँ	38	15.20	हाँ	212	84.80
2.	नहीं	212	84.80	नहीं	38	15.20
	कुल योग	250	100.00	कुल योग	250	100.00

Source: Primary Data Based

उपरोक्त तालिका के आधार पर अध्ययन क्षेत्र में उत्तरदाता स्वयं सहायता समूह के सदस्य बनने के पूर्व कितनी बचत करती थी ? और स्वयं सहायता समूह के सदस्य बनने के पश्चात् कितनी बचत करती है ? इससे संबंधित विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि 84.80 प्रतिशत उत्तरदाता समूह का सदस्य बनने से पूर्व बचत नहीं करती थी, जबकि 15.20 प्रतिशत उत्तरदाता सदस्य बनने से पूर्व बचत करती थी। स्वयं सहायता समूह के सदस्य बनने के पश्चात 84.80 प्रतिशत ऐसी उत्तरदाता है जो बचत करने लग गयी, जबकि सिर्फ 15.20 प्रतिशत उत्तरदाता ही ऐसी है जो सदस्य बनने के पश्चात किसी कारणवश बचत नहीं कर पायी है।

1.7 उत्तरदाताओं के द्वारा स्वंय की आय का बचत एवं व्यय (Savings and Expenditure of own Income by Respondents)

तालिका संख्या 1.7

उत्तरदाता के द्वारा स्वंय की आय का बचत एवं व्ययसंबंधी विवरण

क0 सं0	अपनी आय का कितना प्रतिशत बचत एवं व्यय करती है ?	उत्तरदाता की संख्या	उत्तरदाता की संख्या का प्रतिशत
1.	100 प्रतिशत व्यय	122	48.80
2.	50 प्रतिशत बचत 50 प्रतिशत व्यय	65	26.00
3.	75 प्रतिशत बचत 25 प्रतिशत व्यय	40	16.00
4.	25 प्रतिशत बचत 75 प्रतिशत व्यय	23	9.20
5.	100 प्रतिशत बचत	00	0.00
	कुल योग	250	100.00

Source: Primary Data Based

उपरोक्त तालिका के अनुसार अध्ययन क्षेत्र में सर्वेक्षण के उत्तरदाता अपनी आय का बचत एवं व्यय किस प्रकार करते है ? से संबंधित विश्लेषण से ज्ञात होता है कि 48.80 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसी है जो स्वयं की आय का 100 प्रतिशत व्यय करती है, 26.00 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसी है जो 50 प्रतिशत बचत 50 प्रतिशत व्यय करती है, 16.00 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसी है जो 75 प्रतिशत बचत 25 प्रतिशत व्यय करती है, 9.20 प्रतिशत उत्तरदाता 25 प्रतिशत बचत 75 प्रतिशत व्यय करती है, जबकि कोई भी उत्तरदाता ऐसी नहीं है जो 100 प्रतिशत बचत करती है, जिसे तालिका संख्या 1.7 में दर्शाया गया है।

1.8 उत्तरदाताओं के द्वारा सदस्य बनने के बाद बचत करने के कारण (Reasons for Respondents to save after becoming members of SHGs)

तालिका संख्या 1.8

उत्तरदाताओं के द्वारा सदस्य बनने के बाद बचत करने के कारण संबंधी विवरण

क0 सं0	आपने बचत प्रारम्भ क्यो की ?	उत्तरदाता की संख्या	उत्तरदाता की संख्या का प्रतिशत
1.	बचत हेतु प्रेरित किया गया	95	38.00
2.	स्वप्रेरित होकर बचत शुरू की	48	19.20
3.	बचत की एक निश्चित निर्धारित राशि हेतु	25	10.00
4.	बचत के बिना ऋण नहीं मिलता	64	25.60
5.	बचत के महत्व को समझा	18	7.20
	कुल योग	**250**	**100.00**

Source: Primary Data Based

ऊपर दी गई तालिका के आधार पर अध्ययन क्षेत्र में उत्तरदाताओं का स्वयं सहायता समूह के सदस्य बनने के बाद बचत करने के कारण संबंधित विश्लेषण से ज्ञात हुआ है कि 38.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसलिए बचत आरम्भ की क्योंकि उन्हें बचत हेतु प्रेरित किया गया, 25.60 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा बचत इसलिए आरम्भ की गयी क्योंकि बचत के अभाव में ऋण नहीं दिया जाता है, 19.20 प्रतिशत उत्तरदाता स्वप्रेरित होकर बचत करती है, 10.00 प्रतिशत उत्तरदाता समूह द्वारा निर्धारित आवश्यक बचत धनराशि के कारण हेतु बचत करती है, जबकि 7.20 प्रतिशत उत्तरदाता बचत के महत्व को समझते हुए बचत करती है, जिसे तालिका संख्या 1.8 में दर्शाया गया है।

1.9 उत्तरदाताओं द्वारा स्वयं सहायता समूह हेतु लिए गए ऋण की स्थिति (Status of Loan taken by Respondents for SHGs)

तालिका संख्या 1.9

उत्तरदाता द्वारा स्वयं सहायता समूह हेतु लिए गए ऋण की स्थिति संबंधी विवरण

क0 सं0	क्या आपके द्वारा ऋण लिया गया है?	उत्तरदाता की संख्या	उत्तरदाता की संख्या का प्रतिशत
1.	हाँ	235	94.00
2.	नहीं	15	6.00
		250	100.00

Source: Primary Data Based

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह ज्ञात होता है, कि उत्तरदाता द्वारा स्वयं सहायता समूह हेतु लिए गए ऋण से संबंधी विश्लेषण से यह पता चला है कि 94.00 प्रतिशत उत्तरदाता द्वारा ऋण लिया गया है, जबकि 6.00 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसी है जिनके द्वारा ऋण नहीं लिया गया है जैसे कि तालिका संख्या 1.9 में दर्शाया गया है।

1.10 स्वयं सहायता समूह की उत्तरदाताओं द्वारा लिए गए ऋण प्राप्ति के स्रोत (Sources of Loan taken by Respondents of SHGs)

तालिका संख्या 1.10

स्वयं सहायता समूह की उत्तरदाता द्वारा लिए गए ऋण प्राप्ति के स्रोत संबंधी विवरण

क0 सं0	आपके ऋण प्राप्ति के स्रोत क्या थे?	उत्तरदाता की संख्या	उत्तरदाता की संख्या का प्रतिशत
1.	साहूकार	28	11.20
2.	मित्र/रिश्ते नाते संबंधी	12	4.80
3.	बैंक	135	54.00
4.	समूह से	75	30.00
कुल योग		250	100.00

Source: Primary Data Based

ऊपर दी गई तालिका के आधार पर सर्वेक्षण में उत्तरदाता के ऋण प्राप्ति के स्रोत का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि अधिकतम 54.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बैंक से ऋण प्राप्त किया है, जबकि 30.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने समूह से ऋण लिया है, 11.20 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने साहूकारों से और 4.80 प्रतिशत महिलाओं ने मित्र/रिश्ते नाते संबंधियों से ऋण प्राप्त किया है जिसे तालिका संख्या 1.10 में दर्शाया गया है।

1.11 उत्तरदाताओं द्वारा स्वयं सहायता समूह हेतु बैंक से लिए गए ऋण राशि (Amount of Loan taken from Bank by Respondents for SHGs)

तालिका संख्या 1.11

उत्तरदाता द्वारा स्वयं सहायता समूह हेतु बैंक से लिए गए ऋण राशि संबंधी विवरण

क0 सं0	आपने बैंक से कितना ऋण लिया है ?	उत्तरदाता की संख्या	उत्तरदाता की संख्या का प्रतिशत
1.	रू0 10000 तक	102	40.80
2.	रू0 10001—25000	68	27.20
3.	रू0 25001—40000	55	22.00
4.	रू0 40001 से अधिक	25	10.00
कुल योग		250	100.00

Source: Primary Data Based

उपरोक्त तालिका के अनुसार सर्वेक्षण में उत्तरदाताओं के द्वारा बैंक से लिए गये ऋण धनराशि का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि अधिकतम 40.80 प्रतिशत उत्तरदाता द्वारा रू0 10000 तक ऋण प्राप्त किया गया है, इसी प्रकार 27.20 प्रतिशत उत्तरदाता ने रू0 10001—25000 तक, तथा 22.00 प्रतिशत उत्तरदाता ने रू0 25001—40000 तक का ऋण प्राप्त किया है, केवल 10.00 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसी थी जिन्होने रू0 40001 से अधिक का ऋण बैंक से प्राप्त किया है, जिसे तालिका संख्या 1.11 में दर्शाया गया है।

1.12 उत्तरदाताओं द्वारा स्वयं सहायता समूह हेतु ऋण के भुगतान की स्थिति (Status of Loan repayment by Respondents for SHGs)

तालिका संख्या 1.12

उत्तरदाता द्वारा स्वयं सहायता समूह हेतु ऋण के भुगतान की स्थिति संबंधी विवरण

क0 सं0	आपके बैंक ऋण के भुगतान की क्या स्थिति है ?	उत्तरदाता की संख्या	उत्तरदाता की संख्या का प्रतिशत
1.	पूर्ण भुगतान कर दिया	40	16.00
2.	गतिमान है	188	75.20
3.	नहीं किया है	22	8.80
कुल योग		250	100.00

Source: Primary Data Based

ऊपर दी गई तालिका के अनुसार अध्ययन क्षेत्र के सर्वेक्षण में उत्तरदाताओं द्वारा बैंकों से लिए गए ऋण के भुगतान की स्थिति का विश्लेषण करने ज्ञात होता है कि अधिकतम 75.20 प्रतिशत उत्तरदाता का ऋण अभी भी गतिमान अवस्था में है, केवल 16.00 प्रतिशत उत्तरदाता ने अपने ऋण का पुर्ण भुगतान कर दिया है, सिर्फ 8.80 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसी है जिन्होने अभी ति कुछ भी ऋण का भुगतान नहीं किया है जिसे तालिका संख्या 1.12 में दर्शाया गया है।

1.13 उत्तरदाताओं द्वारा स्वयं सहायता समूह हेतु बैंक से लिए गए ऋण के भुगतान नहीं होने की स्थिति

तालिका संख्या 1.13

उत्तरदाता द्वारा स्वयं सहायता समूह हेतु बैंक से लिए गए ऋण के भुगतान नहीं होने की स्थिति संबंधी विवरण

क0 सं0	आपने बैंक का कितना ऋण भुगतान नहीं किया है ?	उत्तरदाता की संख्या	उत्तरदाता की संख्या का प्रतिशत
1.	रू0 10000 तक	35	14.00
2.	रू0 10001—20000 तक	75	30.00
3.	रू0 20001 से अधिक	140	56.00
	कुल योग	250	100.00

` Source: Primary Data Based

उपरोक्त तालिका के आधार पर सर्वेक्षण क्षेत्र में उत्तरदाताओं द्वारा लिए गए ऋण के भुगतान नहीं की गई धनराशि का विश्लेषण करने से ज्ञात हुआ कि अधिकांश 56.00 प्रतिशत उत्तरदाता ने रू0 20001 तक की धनराशि का भुगतान नहीं किया है, 30.00 प्रतिशत उत्तरदाता द्वारा रू0 10001—20000 तक के बैंक का ऋण का भुगतान नहीं किया गया है, जबकि 14.00 प्रतिशत उत्तरदाता ने रू0 10000 तक का ऋण भुगतान नहीं किया है, जिसे तालिका सख्यां 1.13 में दर्शाया गया है।

1.14 उत्तरदाताओं द्वारा समूह को लौटाये गये ऋण (Loans returned by Respondentsto the SHGs)

तालिका संख्या 1.14

उत्तरदाता द्वारा समूह को लौटाये गये ऋण संबंधी विवरण

क0 सं0	आपने समूह को कितने वर्ष में ऋण लौटाया है?	उत्तरदाता की संख्या	उत्तरदाता की संख्या का प्रतिशत
1.	1 वर्ष	15	6.00
2.	2 वर्ष	50	20.00
3.	3 वर्ष	75	30.00
4.	जारी है	110	44.00
	कुल योग	250	100.00

Source: Primary Data Based

उपरोक्त तालिका के अनुसार अध्ययन क्षेत्र के सर्वेक्षण में उत्तरदाता द्वारा समूह को लौटाये गये ऋ़ण अन्तर्गत यह ज्ञात हुआ कि 30.00 प्रतिशत उत्तरदाता द्वारा 3 वर्ष में, 20.00 प्रतिशत उत्तरदाता द्वारा 2 वर्ष में, 6.00 प्रतिशत उत्तरदाता द्वारा 1 वर्ष में, जबकि 44.00 प्रतिशत ऐसी उत्तरदाता है जिनके पास समूह का ऋ़ण जारी है, जिसे तालिका संख्या 1.14 में दर्शाया गया है।

1.15 उत्तरदाताओं द्वारा समूह से लिए गए ऋण का उपयोग (Utilization of Loan taken by Respondents from the SHGs)

तालिका संख्या 1.15
उत्तरदाताओं द्वारा समूह को लौटाये गये ऋण संबंधी विवरण

क0 सं0	आपने किस किस मद के उपयोग हेतु ऋण लिया है ?	उत्तरदाता की संख्या	उत्तरदाता की संख्या का प्रतिशत
1.	आय सृजन गतिविधियां	90	36.00
2.	खाद्य एवं घरेलू उपयोग	40	16.00
3.	स्वास्थ्य	28	11.20
4.	शिक्षा	60	24.00
5.	सामाजिक परम्पराएं	11	4.40
6.	पुराने ऋणों का पुनर्भुतान	13	5.20
7.	अन्य	8	3.20
	कुल योग	**250**	**100.00**

Source: Primary Data Based

ऊपर दी गई तालिका के आधार पर अध्ययन क्षेत्र में उत्तरदाताओं द्वारा समूह से लिए गए ऋ़ण का उपयोग की मद का विश्लेषण सक ज्ञात होता है कि अधिकांश 36.00 प्रतिशत उत्तरदाता ने ऋ़ण का उपयोग अपनी आय सृजन गतिविधियां बढ़ाने के लिए किया, 24.00 प्रतिशत उत्तरदाता द्वारा ऋ़ण को बच्चों की शिक्षा हेतु खर्च किया गया जबकि खाद्य एवं घरेलू उपयोग तथा स्वास्थ्य पर क्रमशः 16.00 एवं 11. 20 प्रतिशत व्यय किया गया इसके अतिरिक्त पुराने ऋ़णों का भुगतान तथा सामाजिक परम्पराएं आदि पर क्रमशः 5.20 प्रतिशत तथा 4.40 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा ऋ़ण का प्रयोग किया गया है, केवल 3.20 प्रतिशत उत्तरदाता ने ऋ़ण का उपयोग अन्य मदों पर किया है जिसे तालिका संख्या 1.15 में दर्शाया गया है।

1.16 स्वयं सहायता समूह की बैठकों की स्थिति (Status of SHGs Meetings)

तालिका संख्या 1.16
स्वयं सहायता समूह की बैठकों की स्थिति संबंधी विवरण

क0 सं0	बैठक कब करते है ?	उत्तरदाता की संख्या	उत्तरदाता की संख्या का प्रतिशत
1.	साप्ताहिक	30	12.00
2.	पाक्षिक	15	6.00
3.	मासिक	185	74.00
4.	आवश्यकतानुसार	20	8.00
	कुल योग	**250**	**100.00**

Source: Primary Data Based

ऊपर दी गई तालिका के अनुसार अध्ययन क्षेत्र में उत्तरदाताओं से स्वयं सहायता समूहों की बैठकों से संबंधित विश्लेषण करने पर 74.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि बैठक मासिक होती है, 12. 00 प्रतिशत उत्तरदाता ने कहा कि साप्ताहिक होती है, जबकि 8.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि समूह की बैठकें आवश्कतानुसार होती है तथा 6.00 प्रतिशत उत्तरदाता ने कहा कि पाक्षिक होती है जिसे तालिका संख्या 1..16 में दर्शाया गया है।

1.17 उत्तरदाताओं का स्वयं सहायता समूहों की योजना से प्राप्त सहायता से आर्थिक स्थिति में सुधार (Impovement in Economic Condition of Respondents with the help of SHGs Scheme)

तालिका संख्या 1.17
उत्तरदाता का स्वयं सहायता समूहों की योजना से प्राप्त सहायता से आर्थिक स्थिति में सुधार संबंधी विवरण

क0 सं0	क्या योजना से प्राप्त सहायता से आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है ?	उत्तरदाता की संख्या	उत्तरदाता की संख्या का प्रतिशत
1.	हाँ	226	90.40
2.	नहीं	24	9.60
	कुल योग	**250**	**100.00**

Source: Primary Data Based

उपरोक्त तालिका के आधार पर सर्वेक्षण क्षेत्र में उत्तरदाताओं के द्वारा स्वयं सहायता समूहों को प्राप्त योजनाओं के आर्थिक स्थिति में सुधार से संबंधित विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि 90.40 प्रतिशत उत्तरदाताएं स्वीकार करती हैं कि स्वयं सहायता समूहों को योजना से प्राप्त सहायता से उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है, जबकि 6.60 प्रतिशत उत्तरदाता का मानना है, कि इससे उनकी आर्थिक स्थिति में कोई खास सुधार नहीं हुआ जैसे कि तालिका संख्या 1.17 में दर्शाया गया है।

3. सुझाव

महिला स्वयं सहायता समूहों को विकास की ओर अधिक उन्मुख करने के लिए तथा महिलाओं की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के लिए एवं महिलाओं के सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जाते है, जो इस प्रकार है–

1. ग्रामीण क्षेत्रों में स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से विकास की अपार सम्भावनायें है किन्तु इस ओर कई परिवर्तनों की आवश्यकता होगी। सर्वप्रथम लोगों की सोच में परिवर्तन होना अति आवश्यक है।
2. सरकार द्वारा चलायी जाने वाली योजनाओं पर ग्रामीणों को कम विश्वास होता है और वे इन योजनाओं को केवल सरकार की ही योजनायें समझते है अपनी नहीं इस प्रकार की सोच में परिवर्तन का होना अति आवश्यक होगा।
3. अध्ययन क्षेत्र में समूह की महिलाओं द्वारा रोजगार के कई साधनों का उत्पादन किया गया है जैसे– सब्जी उत्पादन, डेरी, वृक्षारोपण, फसल उत्पादन, अचार बनाना, अगरबत्ती बनाना आदि
4. अध्ययन क्षेत्र में अन्य कई प्राकर की जड़ी–बूटियों का उत्पादन कर रोजगार के अवसरों को बढ़ाया गया है किन्तु यहां पर सरकार द्वारा समूहों की महिलाओं की कोई सूद नहीं ली गयी और न ही सरकार द्वारा इनको कोई सहायता प्राप्त हुई।
5. अध्ययन क्षेत्र में समूहों के माध्यम से कई रोजगार के अवसर उपलब्ध कराये जाते है जिससे महिलाओं के परिवारों की मासिक आय में बढ़ोतरी हो सके। अधिकांश महिलाओं के परिवारों की मासिक आय कम है, जिस कारण आर्थिक स्थिति को अभी और अधिक सुदृढ़ कर पाना मुश्किल है इस ओर ध्यान आकृष्ट करने की आवश्यकता होगी। स्वयं सहायता समूहों द्वारा बचत की प्रक्रिया को बढ़ावा देकर आय के स्तर को बढ़ाया जा सकेगा।
6. अध्ययन क्षेत्र में महिला समूहों को और अधिक व्यवसायों जैसे दुग्ध, कृषि, हस्तकला तथा कथकरघा के अलावा अन्य कई व्यवसायों में प्रशिक्षण देने की आवश्यकता होगी जिससे की महिलायें और अधिक आत्मनिर्भर, स्वावलम्बी एवं उनकी आर्थिक स्थिति में और सुधार हो सकेगा।
7. अध्ययन क्षेत्र में यह भी देखा गया कि महिलाओं का समूह में आने के बाद उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है जो महिलायें घर की चार दीवारों के अन्दर ही सीमित रहती थी वे अब बाह्रय स्तर पर कार्य करने लगे ळें
8. महिलायें पहले अपने गांव एवं मित्र संबंधी, साहूकारों से ही ऋण लेती थी किन्तु समूह में आने के उपरान्त महिलायें बैंकों व समूहों से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु ऋणों को लेती है।
9. अध्ययन क्षेत्र में स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से लोगों के जीवन स्तरों में काफी सुधार देखने को मिल सकता है।

10. संदर्भ–सूची (References)

1. प्रो0 गुप्ता एस0पी0, (2011–15), 'अनुसंधान संदर्शिका सम्प्रत्य, कार्यविधि एवं प्रविधि', शारदा पुस्तक भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद, पृ0स0–9,

2. लाल, बसन्ती बावेल, (2015), "Legal Education and Research Methodology"सेन्ट्रल लॉ पब्लिकेशन इलाबाहाद, पृ0सं0–143, 116,
3. जैन0 एल0 और वशिष्ठ के0 सी0 (2007), ''शिक्षण एवं शोध अभियोग्यता,'' आगराः उपकार प्रकाशन, पृ0सं0–128–136,
4. प्रो0 गुप्ता, एस0 पी0 (2011–15), ''अनुसंधान संदर्शिका सम्प्रत्य, कार्यविधि एवं प्रविधि,'' शारदा पुस्तक भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद पृ0सं0–13–14,
5. वेस्ट, जॉन डब्ल्यू0 (1977), ''रिसर्च इन एजूकेशन'', प्रिन्टिस हाल, न्यू जर्सी, पृ0सं0–102,
6. मोले0, जी0 जे0 (1963), "The Science of Educational Research", पृ0सं0–231,
7. पेज, जी0 टेरी एवं थामस जे0 बी0 (1963), "International Dictionary of Education" के0 पी0 लिमिटेड 120, पेन्टोनविले रोड, लन्दन, पृ0सं0–331,
8. करलिंगर, एफ0 एन0 (1976), "Foundation of Behavioural Research" पृ0सं0–275,
9. प्रो0 गुप्ता, एस0 पी0 (2011–15), ''अनुसंधान संदर्शिका सम्प्रत्य, कार्यविधि एवं प्रविधि,'' शारदा पुस्तक भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद, पृ0सं0–108,
10. राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन रिपोर्ट (2018)
11. पारस नाथ राय (2002), ''अनुसंधान परिचय,'' लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा–3, पृ0सं0–291,
12. गुड एण्ड हाट (1952), "Method in Social Research" मैकग्रॉहिल पब्लिकेशन, दिल्ली, पृ0सं0–133,
13. गुप्ता, प्रो0 एम0 एल0, शर्मा, डा0 डी0 डी0 (2009), ''सामाजिक अनुसंधान पद्वतियां,'' साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, पृ0सं0–41, 58,